

11, 19. स्वप्ने ऽवगाहने ऽत्यर्थं जलम् Jāṭ. 1, 271. पुरमत्यर्थमुपशोभितम् N. 26, 29. ऋषिकामस्य चात्यर्थम् SUND. 3, 25. लक्ष्मणो राममत्यर्थमुवाच हि-तकाम्यया (mit dem letzten Worte zu verbinden) R. 3, 68, 5. कुरु कल्याणमत्यर्थम् 75, 39. प्रियो हि ज्ञानिनो ऽत्यर्थमहम् BHAG. 7, 17. अत्यर्थं मधुरं तावगायताम् R. 1, 4, 17. अत्यर्थमधुरं AK. 1, 1, 5, 19. अत्यर्थसंपीडितं Çāk. 170. In Verbindung mit einem compar.: संरब्धतरमत्यर्थं वाक्यम् Viçv. 3, 16.

अत्यल्प (अति + अल्प) adj. sehr klein, sehr wenig AK. 3, 2, 12. H. 1428.

अत्यवि (अति + अवि) adj. über die Seihe (von Schaafwolle) rinnend, vom Soma RV. 9, 45, 5.

अत्यशन (अति + अशन) n. Uebermaass im Essen: न चैवात्यशनं कुर्यात् M. 2, 56.

अत्यष्टि (अति + अष्टि) f. ein Metrum von 68 Silben: ततो ऽष्टाप-ट्ठित्यष्टिः RV. PAṬ. 16, 54. Als Beispiel wird ebend. 58. angeführt RV. 9, 111, 1. Das Schema ist: 12, 12, 8 | 8, 8 | 12, 8. VS. Append. LXIV. In der späteren Metrik ein Metrum von 4 × 17 Silben COLEBR. Misc. Ess. II, 162.

अत्यष्टिसामग्री (अति, अष्टि, सामग्री) f. N. eines Werkes Verz. d. B. H. No. 1131.

अत्यक्म् (अति + अक्म्) adj. = मामतिक्रातः P. 7, 2, 97, Sch.; vgl. BÖHTLINGK zu 7, 2, 90.

अत्यङ्ग (अति + अङ्ग = अङ्गन्) adj. über einen Tag dauernd P. 5, 4, 86, Sch. Vop. 6, 50.

अत्याकार (von कार् mit अति + आ) m. Verachtung, Geringschätzung P. 5, 1, 134. TRIG. 3, 2, 28. H. 442.

अत्यादर (अति + आदर) m. zu grosse Ehrfurcht, zu rücksichtsvolles Betragen PAÑĀT. I, 463.

अत्यादान (अति + आदान) n. ein Wegnehmen im Uebermaass SUÇ. 2, 129, 18.

अत्यादित्य (अति + आदित्य) adj. die Sonne übertreffend MECH. 44.

अत्याधान (von धा mit अति + आ) n. das Darüberlegen, Auflegen P. 1, 4, 75. (vgl. Sch. zu 76.) 3, 3, 80.

अत्याप्ति (अति + आप्ति) f. volle Erreichung AV. 11, 9, 22.

अत्याप (von इ mit अति) 1) adj. überschreitend P. 3, 1, 141. Vop. 26, 37. — 2) m. das Ueberschreiten: प्रज्ञा क्व तिस्रो अत्यापमोयुन्युष्या धूर्क-मभितौ विविधे RV. 8, 90, 14.

अत्याद्वाढि (अति + आद्वाढि) f. das zu hohe Steigen Çāk. Ch. 73, 8.

अत्याल (अति + आल) m. N. einer Pflanze = रक्तचित्रकवृत् RĀGAn. im ÇKDr.

अत्याशा (अति + आशा) f. zu grosse Hoffnung UDBHĀTA im ÇKDr.

अत्याश्रमिन् (von अति + आश्रम) adj. über die vier Āçrama erhaben ÇVETĀÇV. Up. 6, 21. KAIV. Up. in Ind. St. II, 109.

अत्यास (von अस्, अस्याति mit अति) m. das Vorübergehenlassen, das Verstreichenlassen: द्यूकृत्यासं oder द्यूकृत्यासं गाः पाययति er trinkt die Kühe, indem er dazwischen immer 2 Tage verstreichen lässt P. 3, 4, 57, Sch.

अत्याकित (von धा mit अति + आ) n. grosses Unglück Çāk. Ch. 140, 15; vgl. die entspr. Prakṛt-Form अत्राकित Çāk. 12, 18. VIKRAM. 52, 2.

75, 13. MĀLAV. 55, 19. 56, 4. Die indischen Lexicographen (AK. 3, 4, 80. H. an. 4, 93. 94. MED. I. 181.) geben dem Worte 2 Bedeutungen: 1) म-हतीति oder महानय grosse Furcht, grosse Gefahr; 2) कर्म जीवानपेति heroische That.

अत्युक्ति (अति + उक्ति) f. Uebertreibung: अत्युक्ता न यदि प्रकुप्यमि मयावादं च नो मन्यसे तद्वनो ऽद्भुतकीर्तनेन रसना केपो न कण्डूयते Çāṇāc. PADDH. Sāmānjaraḡapraçamsā.

अत्युय (अति + उय) 1) adj. sehr scharf, stechend: überaus schrecklich (Rakshas, Vid. 313.) u. s. w. — 2) n. Asa foetida H. ç. 102.

अत्युच्चैस् (अति + उच्चैस्) adv. sehr hoch, vom Ton: ततो ऽत्युच्चैर्धनिः H. 1409.

अत्युत्कट (अति + उत्कट) adj. ausserordentlich, ungewöhnlich: त्रि-भिर्वर्षैस्त्रिभिर्मसिस्त्रिभिः पक्षैस्त्रिभिर्दिनैः । अत्युत्कटैः पापपुण्यैरेकैव फल-मश्नते ॥ Hit. I, 78.

अत्युत्साह (अति + उत्साह) m. gesteigerte Kraft SUÇ. 2, 541, 18.

अत्युपध (अति + उपधा) adj. geprüft, als ehrenhaft befunden: अनात्पे चात्युपधे AK. 3, 4, 30.

अत्युत्त्वण (अति + उत्त्वण) adj. überaus heftig, stark: (पातुधानानाम्) अत्युत्त्वणो नादः पूयामास तद्वनम् R. 3, 30, 29.

अत्युल्ल (अति + उल्ल) adj. sehr heiss: अत्रम् M. 3, 236.

अत्युमशा gaṇa ऊर्पादि.

अत्यूर्म (अति + ऊर्म) adj. überwallend: अत्यूर्मर्मत्सरो मदः सोमः प-वित्रं अर्पति RV. 9, 17, 3.

अत्यूह (अति + ऊह) 1) m. a) starkes Nachsinnen (अतिशयवितर्क) ÇKDr. — b) Pfau H. an 3, 761. MED. h. 13; vgl. दात्यूह. — 2) f. ०हा N. einer Pflanze, Nyctanthes Arbor tristis (नीलिका), dies.

1. अत्र (von 2. अत्र b) adv. 1) loc. von इन् und zwar a) mit subst. Bed.: अत्र (d. i. नाभिप्रदेशे) वा अत्रं प्रति तिष्ठति ÇAT. Br. 3, 3, 4, 28. अत्रेव परिच्यय-ति 7, 1, 19. त्रीणि आद्वे पवित्राणि — त्रीणि चात्र (d. i. आद्वे, प्रशंसति M. 3, 235. एकैकमत्र (d. i. मुद्रायाम्) दिवने दिवसे मदीयं नामात्तरं गणय Çāk. 139. अत्र (d. i. पुत्रे) खलु मे वंशप्रतिष्ठा 111, 18. एवो ऽत्र (unter den zueien) उदातः । द्वितीया ऽनुदातः KĀc. zum gaṇa सर्वादः. सो ऽत्र (unter diesen) मानार्हः M. 2, 137. कृत्रिमाणि पालान्यत्र (d. i. नौपु) R. 1, 9, 5. hierbei. in dieser Angelegenheit, in Bezug darauf: नात्र संशयः M. 2, 87. N. 19, 16. पुष्पाकं क्वात्र नातिता M. 8, 80. अत्र गाया वायुगोताः कीर्तयन्ति 9, 12. अत्र श्तिरुमामाचतते SĀ. bei ROSEN zu RV. 18, 1. ब्रह्मात्रैव हि कारणम् M. 11, 84. यदत्र सत्यं वासत्यम् N. 19, 8. अत्र मे मरुतो शङ्का भवेदेष नलो नृपः 22, 3. अत्र परिगतार्थं क्वा Çāk. 95, 20. किमत्र प्रतिविधेयम् 29, 21. भवत्-मेवात्र गुरुत्वाधवं पृच्छामि 71, 5. अत्र खलु शतक्रतोरेव मरुता स्तुत्यः 98, 3. किमत्र चित्रम् AMAR. 68. किमत्र चित्रं यदि Çāk. 35, 21. तयापि वय-मत्र मध्यस्थाः 63, 19. तदत्र कौतुकमस्माकं वनेति PAÑĀT. 195, 12. तदत्र — प्रतीकारश्चिन्त्यताम् Hit. 13, 19. अकिंसा परमो धर्म इत्यत्रैकमत्यम् 19, 22. अने प्रयत्नेन तवात्र RAGH. 3, 50. — b) mit adj. Bedeutung: अत्राधि-ष्ठाने PAÑĀT. 43, 2. अत्र विषये 81, 10. 149, 2. अत्रात्तरे Çāk. 59. Hit. 7, 20. 43, 19. Vid. 28, 154. अत्र प्रकारेण KĀc. zu P. 8, 1, 67. अत्र सूत्रे P. 2, 1, 25. अत्राश्रमिके Hit. 12, 10. मांसमूत्रपुरीषाद्य-निमित्ते च कलेयरे । विनश्ये किमत्रास्या I. 41. लोकं ऽत्रैव परत्र च PAÑĀT. I. 332. — 2) vom Orte: hier ÇAT. Br. 1, 1, 4, 17. Çāk. 88, 10. Vid. 187.